❑वचनिका

अचलदास खीची री वचनिका

शिवदास गाडण

वचनिकाकार परिचै

शिवदास गाडण रौ जलम 14वीं सदी रै उतराद में होयौ। सिवदास गाडण साखा रा चारण हा। गागरोन गढ (झालावाड़) रा राजा अचलदास खीची रा आप राजकवि हा। लेखक री दूजी रचनावां अर जीवण परिचै शोध रौ विसय है। शिवदास गाडण आदिकाळ अर मध्यकाळ रै संधिकाळ रौ रचनाकार है। चारणी साहित्य मुजब वीर रस रौ घणौ उम्दा वरणन इण वचनिका में करयौ है। रचनाकार उण जुग री सांस्कृतिक, सामाजिक अर राजनीतिक परिस्थितियां रौ आछौ जाणकार हौ। वचनिका रौ इण पाठ में लिरीज्यौ अंस इण बात री साख भरै। शिवदास अचलदास सागै बरोबर जुद्ध में मौजूद रैयौ पण घणौ विनय करण रै बाद पाल्हणसी सागै भावी नीति सारू जुद्ध सूं बहीर होयौ। आ रचना आंख्यां देखी विगत है। अचळदास खीची नैं अमर करण सारू शिवदास गाडण इण वचनिका री रचना करी। चंपू काव्य-सैली नै अंगेजता थकां मौलिकता सागै इण वचनिका में तुकांत गद्य सागै पद्य रौ निभाव इण रचना में है। वचनिका सैली री रचनावां में अचलदास खीची री वचनिका भाव, भासा, अभिव्यंजना अर मौलिकता रै पाण राजस्थानी साहित्य में 'मील रौ पत्थर' मानीजै।

पाठ परिचै

अचलदास खीची री वचनिका राजस्थानी री मध्यकालीन गद्य विधावां में हरावळ री रचना मानीजै, जिणमें अचलदास खीची रै अचल, अनमी, स्वतंत्रताप्रेम, आन-बान अर राजपूती शान लारै मरण नैं मंगळ गिणण रै सुभाव रौ वरणन है। स्वाभिमान, स्वतंत्रता अर धरम नैं राखण सारू आपरा प्राण न्यौछावर करण री 'शाका रीत' रौ सांगोपांग वरणन इणमें होयौ है। गागरोन गढ (झालावाड़) रा धणी अचलदास खींची अर मांडू (माळवै) रा मांडूपति सुल्तान आलमशाह गौरी (होसंगशाह) रै बिचाळै वि. सं. 1485 में होयोड़ै जुद्ध रौ ओजस्वी वरणन है। होसंगशाह री गुलामी री सरत स्वीकार नीं करण रै कारण अलचदास माथै चढाई करै। दोनां रै बिचाळै घमासाण जुद्ध होवै। धरती, धरम अर स्वतंत्रता सारू अचलदास खीची अदम्य साहस सागै लड़ै। गुलामी नैं धिक्कारता वीरता सागै रणखेत होय जावै। औ जुद्ध फगत अचलदास ही नीं लडै, बल्कै उणरै सागै सगळी कौम री प्रजा भी आहूति देवै। पाठ में आयोड़ा वचनिकां रै अंसां में होसंगशाह री विसाल सेना री जाणकारी मिळै। राजस्थान अर आसै-पासै रै रजवाड़ां रै अनमी राजावां रै वरणन सागै नरसिंहदास जैड़ा वीरां रौ भी कीर्ति वरणन है। शेर अर हाथी रै ताण स्वतंत्रता रौ मोल दरसाईज्यौ है। गद्य रै सागै पद्य रौ प्रयोग ई वचनिका सैली री खास विसेसता है। होसंगशाह री मोटी अर विडराळ सेना देखनै ई अनमी अर अचल अलचदास खीची उण सूं खांडौ लेवण सूं लारै नीं हटै। अचळदास रै सुभाव अर कीरत रौ बखाण करता थकां कवि उणरै अचल सुभाव नैं घणै मान सरावै। अैड़ा मायड़ रा सपूतां सूं धरती धिन-धिन होयगी।

अचलदास खीची री वचनिका

(1)

इसी परित्या खउदाळ्म गोरी राजा बारह लख मालवा-रउ चकरवरती। तइ-रइ तेवाणूं लाख मालवा-रा कटक-बंध रउ आरंभ-पारंभ गरवातन गडावरउ।

तइ कटक-बंधि मांहि तउ कहइ दिखाळउं, महाधर तउ कवण-कवण?

उसमाखान फतेखान गजनीखान उमरखान हइबतिखान। खान तउ मुगीस सारिखा।

हिन्दू राजा कवण-कवण? सकळ ही सक-बंधी, सगळ कळा-संपूरण, राजा नरसिंघ सारीखा। तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालितां सातरि आगलइ दळि पाणी, पाछिलई दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ विकमाईत।

दूहो

अेकइ वन्नि वसंतड़ा, अेवड अंतर काइ?।
सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ।।

कुंडळियो

गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तंह जाइ।
सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दइ लक्खि विकाइ।।
तद दइ लक्खि विकाइ, मोल जाणणि मुंहगेरा।
कड़वा कारणि कथिन कोपि खउंदाळिम केरा।।
वेढ़ कीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ दुहुं करि।
राइ न ग्रहउ नरसिंघ गळइ गळहथ जउं गइवरि।।

ते राजा नरसिंघदास सारीखा। बतीस सहस साहण रिण-खेति मेल्हि चाल्यउ। मदोनमत्त हस्ती मेल्हि चाल्मउ। आपण जाइ समंदइ घाल्यउ। समंद जाइ खांडउ पखाळ्यउ। अनेक राइ मद-गलित कर मेहल्या।

ते राजा नरसिंघदास सारीखा। ते राजा नरसिंघदास का कुंवर तउ चांदजी खेमजी सारिखा। मानंगपुरी-का चकरवरती लखमराव सारिखा। देवीसाह सारिखा। बूंदी-का चकरवरती अवर देवड़ा हिंदू-राइ। बंदि-छोड, दूसरा मालदे-समरसीह सारिखा।

देस तउ कउण-कउण? सतियासी, नमियाड़, जुग मानधाता, आसेरि, दूगउर, सिलारपुर लगई-का-कटिबंध। मझ-देस तउ मांडव, धार, उजीण, सीहउर, खंड-खंड का, नगर-नगर का, खान-मीर-अमराव चतुरंग दळ चाल्या, पातसाह आपुणपउ घाल्या।

××

इसउ हिंदू राजा उपकंढि कउण छइ, जिकइ मनि पातिसाह-की रीस वसी? कवण का माथा-तईं खिसी कवण हइ दई रूठव। कउण-की माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी? आज तउ सोम-सातळ कान्हड़दे नहीं सीहउरि रउळू नहीं। तिलकछपरि गहिल-उत नहीं, सीहउरि रउळु नहीं, हठ-कउ राउ हमीर आथम्यउ।

अउर पातिसाह हुवा वाभा आभा आलिगेरा, अर भला-भलेरा; त्यां तउ-चउ-रासी द्रुग लिया था, अेकइ दिहाड़इ।

तेणि पातिसाहि आयां सांतरि कुण सहइ? कुणइ सहिजइ? कुण-की जुक्ती! कुण-की प्राप्ती? कुण-की माइ वियाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी?

यउ तउ पातिसाह उतर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम कउ जइतवार, इ-का पुरूखारथ-प्रवाड़ां नाहि पार। धन-धन हो राजा अचळेसर! थारउ जियउ, जिणि पातिसाह-सउं खांडउ लियउ।

तेणि पातिसाह आयां सांतरि सत छांडइ नहीं, खत्र खांडइ नहीं, दीण न भाखइ, पागार-लंघित न होयइ। ते राजा अजळेसर सारिखा अचळ नइ अचळेस-ही होयइ।

अचळेसर तउ किसउऊ उत्तर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम-कउ भड़-किंवाड़, आइन्यां अजरपाळ, अहंकारि रावण, दूसरउ धारू, तीसरउ सिंघण; छइ दरसण छयावइ पाखंड-कउ अधार। बाळउ चकरवरती। धन-धन हो राजा अचळेसर। थारउ जिसउ जिणि हइ पातिसाह सउ खांडउ लियउ।

पाठ रौ भाव-अरथ

इण भांत वौ लोक रौ भार उठावणियौ गौरी वंसीय राजा। बारह लाख आय वाळौ मालवा खंड रौ चक्रवर्ती राजा है। उणरै तेराणवैं लाख मालवा री सेना रौ दळ है। उण सेना दळ रौ आरंभ-प्रारंभ बडप्पन है।

उण सेना-दळ में जका जोधा है, वांरौ कैयनै वरणन करूं हूं। मोटा थंभ, वा में कुण-कुण— उसमाखान, फतेखान, गजनीखान, उमरखान, हैवतखान। खान भी मुगसीखान जैड़ा।

हिंदू राजा कुण-कुण? सगळा ही साका-बंध (साकौ करणिया) सगळी कळावां सूं परिपूरण राजा नरसिंहदास जैड़ा। उण नरसिंहदास री सेना-दळ नैं चालतां हरावळ नैं पाणी मिळै तौ लारलै दळां नैं कीचड़ अर सैन्य-दळां रै चालण सूं धूड़ उडण लागै। इसी विसाल सेना रौ दळ है। औ दूजौ विक्रमादित्य है।

दोनूं अेक इज वन में बसै पण फेरूं भी इत्तौ अंतर क्यूं है? शेर नैं तौ कोई भी कोडी में भी नीं लेवै, जदकै हाथी लाखां में बिकै।

हाथी रै गळै में गळबंधण होवै। उणनैं जठै खेंचा, बठै जावै। जे सिंघ इण गळबंधण नैं स्वीकार कर लेवै तौ वौ दस लाख में बिकै। उणरौ मोल ऊंचौ है। बादशाह रै आकरै बोल रै कारण रीस करनै पड़िहार (नरसिंहदास) जुद्ध करयौ। दोनूं हाथां कटार थामी। पण हाथी रै दांई गळै में सांकळ घालनै राजा नरसिंहदास नैं नीं पकड़्यौ।

उण राजा नरसिंहदास जैड़ा बत्तीस हजार घोड़ा रणखेत में राखनै चाल्या। मदगैला हाथी राखनै चाल्यौ। खुद जायनै (कटन नैं) समदर तांई पुगा दियौ अर समदर में जायनै खाग नैं धोयी। अनेकूं राजावां रौ मान-मरदन करयौ।

वै राजा नरसिंहदास जैड़ा। वै राजा नरसिंहदास रा बेटा चांदजी-खेमजी जैड़ा। मातंगपुरी रा चक्रवर्ती लखमराव जैड़ा। देवीशाह जैड़ा। बूंदी रा चक्रपति अर देवड़ा जैड़ा। हिंदू राजावां नैं बंदीखानै सूं छुडावण वाळा। दूजै मालदेव अर समरसिंह जैड़ा।

××

अैड़ौ हिन्दू राजा आसै-पासै कुण है, जिणरै मन में बादशाह रै बराबरी री रीस बसै? किणरै माथै सूं बुद्धि निसरी? किण सूं भाग अपूठौ होयौ। किसी मां अैड़ौ पूत जण्यौ जकौ साम्हीं छाती मुकाबलै सारू टिकै। आज तौ सातळ, सोम अर कान्हड़दे भी धरती माथै कोनी। तिलकछापर में गुहिलोत भी नीं है। सिहोर में रावळ भी नीं है। हठी राजा हमीर भी आथमग्या।

अर बादशाह हुया आला अलिगेरा (पैलै दरजै रा) भल-भलेरा होया। वां तौ चौरासी दुरग लिया हा अर औ सुल्तान तौ दूजौ अलाउद्दीन है, जिकौ अेक ई दिन में चौरासी दुरग लिया हा।

उण बादशाह रै आयां या आवण माथै कुण भार झेलै? अर किणसूं सह्यौ जावै? किणरी युक्ति, किणरी पावती? किणरी मां अैड़ौ पूत जण्यौ जिकौ साम्हीं जमै। औ बादशाह उतरादी, दिखणादी, आथूणी अर अगूणी— च्यारूं दिसावां नैं जीतण वाळौ है। इणरै पौरुस रौ, गाढ रौ, वीरत्व रा कामां रौ पार नीं है। धिन-धिन है राजा अचलेस्वर थांनै जिकौ बादशाह सूं लोहौ लियौ। साम्हीं तलवार दिखाई।

जकौ बादशाह रै आयां उपरांत ई आपरौ सत नीं छोडै। रजपूतपणै नैं खंडित नीं करै। दीन बोल बोलै नीं। दुरग अर परकोटै नैं छोडनै नीं जावै। राजा अचलेस्वर जैड़ा अचल मिनख ही अचलसिंह ई होय सकै है।

अचलेस्वर भी किसौ जकौ उतरादै, दिखणादै, अगूणै अर आथूणै रौ भड़-किंवाड़। अजयपाल जिसौ। अहंकार में रावण जैड़ौ। दूजौ धारू (चौहान वीर), तीसरौ सिंघण (चौहान वीर)। षट् दरसण, साधू (जंगम सेवड़ा संन्यासी) अर छियांणवैं पाखंड रौ आधार धिन-धिन है। अचलेस्वर, थारौ काळजौ मोटौ, कै थूं बादशाह सूं खांडौ लियौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

इसी परि=इण भांत। कटक-सेना। बंधि=दळ। महाधर=मोटौ थंभ। कवण-कवण=कुण-कुण। सकळ=सगळा। सकबंधी=केसरिया बागा पैरनै आर-पार रौ जुद्ध करणिया, मरणवाळा। सारीखा=जैड़ा, जिसा। खेह=धूड़। वन्नि=वन। अेवड़=इत्तौ। काइ=क्यूं। सीह=शेर। गइवर=हाथी। विकाइ=बिकै। वेढ=जुद्ध, राड़, रणरौळ। करि=हाथ। उपकंठि=नैड़ौ। छह=है। दई=देवता। रूठउ=रूसग्यौ। विवाणी=जाण्यौ है। आथम्यउ=आथमग्यौ, बिसूंजग्यौ, अस्त होयग्यौ। अउर=दूजा। आलिगेरा=पैलै दरजै रा। दिहाड़इ=दिन में। खाउंड लियउ=जुद्ध करणौ। खत्र=क्षत्रीयपणौ, रजपूती। खांडइ=खांडौ, तोड़ै। भड़-किंवाड़=वीर री उपाधि है, जकौ बैरी नैं किंवाड़ दांई बारै इज रोक्यां राखै। सूर=सूरज। खेह=खंख, रंजी, धूड़ी, गरद। सिरि=ऊपर माथै। भागा=टूटग्या।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'अचलदास खीची री वचनिका' किण सैली री रचना है—

   (अ) ख्यात (ब) दवावैत

   (स) वचनिका (द) वार्ता

   ( )

2. 'अचलदास खीची री वचनिका' रै रचयिता रौ नांव कांई है—

   (अ) ईसरदास बारठ (ब) पृथ्वीराज राठौड़

   (स) नरपति नाल्ह (द) शिवदास गाडण

   ( )

3. किणरौ मोल लाख रुपिया आंकीजै—

   (अ) गाय रौ (ब) हिरण रौ

   (स) हाथी रौ (द) सिंघ रौ

   ( )

4. अचलदास खीची किणरै सागै जुद्ध कर्‌यौ—

   (अ) औरंगजेब (ब) अलाउद्दीन

   (स) अकबर (द) आलमशाह गौरी

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बादशाह रै साम्हीं कुण आपरौ सत नीं छोडै ?
2. हाथी अर सिंघ रौ मोल कांई है ?
3. हिंदू राजा में सबसूं मोटौ राजा कुण हौ ?
4. अचल कुण रैवै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'साकौ' कांई होवै ?
2. बादशाह रै साम्हीं कुण आपरौ खांडौ उठावै अर क्यूं ?
3. अचलदास खीची सेना रा चार सेनानायकां रा नांव बतावौ।
4. अचलदास खीची रै वीर चरित्र रा चार गुण लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. अचलदास खीची रौ चरित्र-चित्रण करौ।
2. वचनिका रै मूळ संदेस नैं विस्तार सूं बतावौ।
3. वचनिका में हाथी अर सिंघ में कांई अंतर बतायौ है ? साथै ई इण संदर्भ में अचलदास खीची रै सुभाव नैं दरसावौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. ते राजा नरसिंघदास सारीखा। ते राजा नरसिंघदास का कुंवर तउ चांदजी खेमजी सारिखा। मानंगपुरी-का चकरवरती लखमराव सारिखा। देवीसाह सारिखा। बूंदी-का चकरवरती अवर देवड़ा हिंदू-राइ। बंदि-छोड, दूसरा मालदे-समरसीह सारिखा।

2. सउ हिंदू राजा उपकंढि कउण छइ, जिकइ मनि पातिसाह-की रीस वसी ? कउण-का माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी ? आज तउ सोम-सातळ, कान्हड़दे, नहीं तिलकछपरि गहिल-उत सोम-सातळ कान्हड़दे, नहीं तिलकछपरि गहिल-उत नहीं, सीहउरि रउळु नहीं, हठ-कउ राउ हमीर आथम्यउ।

3. अचळेसर तउ किसउऊ उत्तर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम-कउ भड़-किंवाड़, आइन्यां अजरपाळ, अहंकारि रावण, दूसरउ धारू, तीसरउ सिंघण; छइ दरसण छयावइ पाखंड-कउ अधार। बाळउ चकरवरती। धन-धन हो राजा अचळेसर। थारउ जिसउ जिणि हइ पातिसाह सउ खांडउ लियउ।